

## Chapter 4

<p>The Network of Thought Chapter 4 4th Public Talk Saanen 19th July 1981</p>	<p><b>अध्याय चार</b></p>
<p>1 Order is necessary in our everyday activity; order in our action and order in our relationship with each other. One has to understand that the very quality of order is totally different from that of discipline. Order comes through directly learning about ourselves - not according to some philosopher or some psychologist. We discover order for ourselves when we are free from all sense of compulsion, from all sense of determined effort to obtain order along a particular path. That order comes very naturally. In that order there is righteousness. It is order, not according to some pattern, and not only in the outward world, which has become so utterly chaotic, but inwardly within ourselves where we are not clear, where we are confused and uncertain. Learning about ourselves is part of order. If you follow another, however erudite, you will not be able to understand yourself.</p>	<p>हमारे प्रतिदिन के क्रियाकलाप में व्यवस्था का होना अत्यावश्यक है। साथ ही साथ हमारे एक दूसरे के प्रति संबंध में भी व्यवस्था होनी चाहिए। यह समझना ज़रूरी है कि व्यवस्था का गुणधर्म ही अनुशासन के निहितार्थ से एकदम अलग होता है। व्यवस्था आती है अपने बारे में प्रत्यक्ष रूप से सीखने के परिणामस्वरूप--किसी दार्शनिक या किसी मनोवैज्ञानिक के अनुसार सीखने से नहीं। दबाव के किसी भी भाव से जब हम मुक्त होते हैं, किसी विशिष्ट मार्ग से व्यवस्था उपलब्ध करने के दृढ़ प्रयास के भाव से मुक्त होते हैं, तब हमें अपने आप व्यवस्था का पता चल जाता है। वह व्यवस्था स्वतः ही, सहज ही आ जाती है। उसी व्यवस्था में सही होना संभव होता है। ऐसी व्यवस्था किसी ढांचे के अनुरूप नहीं होती--न सिर्फ अस्तव्यस्त हालत में उलझी इस बाहरी दुनिया में, बल्कि अस्पष्टता, दुविधा और अनिश्चितता से ग्रस्त हमारे अंतरंग में भी इस व्यवस्था का आगमन होता है। अपने बारे में सीखना उस व्यवस्था का ही एक हिस्सा है। यदि आप किसी और का अनुसरण करेंगे, वह कितना भी विद्वान क्यों न हो, आप स्वयं को समझ नहीं पाएंगे।</p>
<p>2 To find out what order is we must begin to understand the nature of our relationships. Our life is a movement in relationship; however much one may think one lives alone, one is always related to something or other, either to the past or to some projected image in the future. So, life is a movement in relationship and in that relationship there is disorder. We must examine closely why we live in such disorder in our relationships with each other - however intimate or superficial.</p>	<p>व्यवस्था क्या होती है इसका पता लगाने के लिए हमें अपने संबंधों के स्वरूप को समझना शुरू करना होगा। हमारा सारा जीवन संबंधों की गतिविधि से ही बना है। आप भले ही ऐसा मान बैठें कि आप अकेले जी रहे हैं, पर वास्तव में आप हमेशा किसी न किसी चीज़ से जुड़े हुए होते हैं, या तो अतीत के साथ, या फिर भविष्य में प्रक्षेपित किसी प्रतिमा के साथ। तो जीवन है संबंध की गतिविधि, और उस संबंध में अव्यवस्था बनी हुई है। बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से हमें जांच-पड़ताल करनी होगी कि आपसी संबंधों की ऐसी दुर्व्यवस्था में हम क्यों जी रहे हैं, वे संबंध चाहे जितने घनिष्ठ हों या सतही।</p>
<p>3 The speaker is not trying to persuade</p>	<p>यह वक्ता आपको किसी विशिष्ट दिशा में सोचने</p>

## Chapter 4

<p>you to think in a particular direction, or put any kind of persuasive, subtle pressure on you. On the contrary, we are together thinking over our human problems and discovering what our relationship with each other is and whether in that relationship we can bring about order. To understand the full meaning of relationship with each other, however close, however distant, we must begin to understand why the brain creates images. We have images about ourselves and images about others. Why is it that each one has a peculiar image and identifies himself with that image? Is the image necessary, does it give one a sense of security? Does not the image bring about the separation of human beings?</p>	<p>के लिए उद्यत नहीं करना चाहता, न ही आप पर किसी प्रकार का सूक्ष्म दबाव डाल कर आप से कुछ मनवाना चाहता है। बल्कि हम तो साथ-साथ अपनी मानवीय समस्याओं पर विचार-विमर्श कर रहे हैं और पता लगा रहे हैं कि हमारा एक दूसरे के साथ क्या संबंध है और क्या हम उस संबंध में सुव्यवस्था ला सकते हैं। यदि हम अपने आपसी संबंधों का संपूर्ण अभिप्राय समझना चाहते हैं, वह संबंध चाहे जितना करीबी हो या दूर का, तो हमें यह समझ लेना होगा कि हमारा मस्तिष्क प्रतिमाएं क्यों बनाता है। हम अपने बारे में प्रतिमाएं बनाते हैं और दूसरों के बारे में भी। प्रत्येक व्यक्ति अपने बारे में कुछ विलक्षण प्रतिमा क्यों बना लेता है, और फिर उस प्रतिमा के साथ अपना तादात्म्य क्यों कर लेता है? क्या उस प्रतिमा की कोई आवश्यकता है? क्या वह प्रतिमा हमें सुरक्षा का एहसास देती है? क्या वह प्रतिमा मनुष्य मनुष्य के बीच विभाजन नहीं उत्पन्न करती?</p>
<p>4 We have to look closely at our relationship with wife, husband or friend; look very closely, not trying to avoid it, not trying to brush it aside. We must together examine and find out why human beings throughout the world have this extraordinary machinery that creates images, symbols, patterns. Is it because in those patterns, symbols and images, great security is found?</p>	<p>हमें अपनी पत्नी के साथ, अपने पति के साथ या अपने मित्र के साथ अपने रिश्ते को बहुत सूक्ष्मतापूर्वक देखना होगा, बहुत करीब से अवलोकन करना होगा, बिना उससे बचने की या उसे परे हटा देने की चेष्टा किए। हमें साथ-साथ जांच-पड़ताल कर पता लगाना होगा कि विश्व भर के मनुष्यों में प्रतिमाएं, प्रतीक, ढांचे उत्पन्न करने वाली यह असाधारण यंत्रप्रणाली क्यों मौजूद है। क्या इसलिए कि उन ढांचों में, उन प्रतीकों में, उन प्रतिमाओं में बड़ी सुरक्षा का अनुभव होता है?</p>
<p>5 If you observe you will see that you have an image about yourself, either an image of conceit which is arrogant, or the contrary to that. Or you have accumulated a great deal of experience, acquired a great deal of knowledge, which in itself creates the image, the image of the expert. Why do we have images about ourselves? Those images separate people. If you have an image of yourself as Swiss or British or French and so on, that image not only distorts your observation of humanity but it also separates you from others.</p>	<p>यदि आप देखेंगे तो आप को पता चलेगा कि आपकी अपने बारे में कोई प्रतिमा है, या तो घमंडी, हेकड़ या फिर उसके बिलकुल विपरीत। या फिर बहुत सारा अनुभव आपने इकट्ठा कर लिया है, बहुत सारा ज्ञान अर्जित कर लिया है जो अपने-आपमें एक प्रतिमा बनाता है, एक विशेषज्ञ की प्रतिमा। अपने बारे में ऐसी प्रतिमाएं क्यों बनाई जाती हैं? इन प्रतिमाओं के कारण लोगों में विभाजन हो जाता है। यदि आपकी एक स्विस के रूप में, एक ब्रिटिश के रूप में या एक फ्रेंच के रूप में या और किसी रूप में कोई प्रतिमा है, तो वह प्रतिमा मानवजाति के आपके निरीक्षण में विकृति उत्पन्न करेगी, इतना ही नहीं, बल्कि साथ</p>

## Chapter 4

<p>And wherever there is separation, division, there must be conflict - as there is conflict going on all over the world, the Arab against the Israeli, the Muslim against the Hindu, one Christian church against another. National division and economic division, all result from images, concepts, ideas and the brain clings to these images - why? Is it because of our education, because of our culture in which the individual is most important and where the collective society is something totally different from the individual? That is part of our culture, part of our religious training and of our daily education. When one has an image about oneself as being British or American, that image gives one a certain security. That is fairly obvious. Having created the image about oneself that image becomes semi-permanent; behind that image, or in that image, one tries to find security, safety, a form of resistance. When one is related to another, however delicately, however subtly, psychically or physically, there is a response based on an image. If one is married or related intimately with somebody, an image is formed in one's daily life; whether one is acquainted for a week or ten years, the image is slowly formed about the other person step by step; every reaction is remembered, adding to the image and stored up in the brain so that the relationship - it may be physical, sexual, or psychical - is actually between two images, one's own and the other's.</p>	<p>ही साथ वह आपको दूसरों से अलग भी कर देगी। और जहां कहीं अलगाव है, विभाजन है, वहां द्वंद्व भी अवश्यंभावी है जैसा कि विश्व भर में हो रहा है, अरब के विरुद्ध इज़रायल, हिंदू के विरुद्ध मुस्लिम, एक ईसाई पंथ के विरुद्ध दूसरा ईसाई पंथ। सारे राष्ट्रीय विभाजन, आर्थिक विभाजन, प्रतिमाओं से, धारणाओं से, संकल्पनाओं से ही उत्पन्न होते हैं और मस्तिष्क इन प्रतिमाओं से चिपका रहता है--क्यों? यह हमारी शिक्षा के कारण, हमारी संस्कृति के कारण तो नहीं? क्योंकि इस शिक्षा में, इस संस्कृति में व्यक्ति का सर्वाधिक महत्त्व है और सामूहिक समाज को व्यक्ति से एकदम भिन्न माना गया है। यह हमारी संस्कृति का, हमारे धार्मिक प्रशिक्षण का और हमारी प्रतिदिन की शिक्षा का हिस्सा है। जब किसी की अपने बारे में कोई प्रतिमा होती है, ब्रिटिश या अमेरिकन के तौर पर, तो वह प्रतिमा उसे एक किस्म की सुरक्षा प्रदान करती है। यह काफी स्पष्ट है। अपने बारे में आपने कोई प्रतिमा बनायी नहीं कि वह प्रतिमा लगभग स्थायित्व प्राप्त कर लेती है। उस प्रतिमा की आड़ में, या उस प्रतिमा में सुरक्षा, सलामती पाने की हम चेष्टा करते हैं जो एक प्रकार का प्रतिरोध है। जब भी कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से संबंधित होता है, चाहे कितनी भी मृदुता के साथ, सूक्ष्मता के साथ, मानसिक रूप से, या शारीरिक रूप से, तो प्रतिमा पर आधारित प्रतिक्रिया होती है। यदि कोई किसी से विवाहबद्ध हो जाता है या उससे घनिष्ठता से जुड़ जाता है तो उसके प्रतिदिन के जीवन में उस दूसरे व्यक्ति की एक प्रतिमा बनती है; उसका उस दूसरे व्यक्ति के साथ एक सप्ताह का परिचय हो या दस वर्षों का, उसके बारे में धीरे-धीरे, कदम-दर-कदम एक प्रतिमा बनती जाती है, हर प्रतिक्रिया का स्मरण किया जाता है जो उस प्रतिमा में कुछ जोड़ता है और यह सब मस्तिष्क में संचित होता रहता है। परिणामस्वरूप उस व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के साथ रिश्ता, वह चाहे शारीरिक हो, यौन हो या मानसिक, केवल दो प्रतिमाओं के बीच का रिश्ता होता है--उसकी अपनी प्रतिमा और उस दूसरे व्यक्ति की प्रतिमा।</p>
<p>6 The speaker is not saying something extravagant, or exotic, or fantastic, he is</p>	<p>यह वक्ता कोई मनमानी, लुभावनी, बेतुकी बात नहीं कह रहा है, वह बस इस बात की ओर</p>

## Chapter 4

<p>merely pointing out that these images exist. These images exist and one can never know another completely. If one is married or one has a girl friend, one can never know her completely; one thinks one knows her because having lived with that person one has accumulated memories of various incidents various irritations and all the occurrences which happen in daily life; and she also has experienced her reactions and their. images are established in her brain. Those images play an extraordinarily important part in one's life. Apparently very few of us are free from any form of image. The freedom from images is real freedom. In that freedom there is no division brought about by images. If one is a Hindu, born in India with all the conditioning to which one is subject, the conditioning of the race, or of a particular group with its superstitions, with its religious beliefs, dogmas, rituals - the whole structure of that society - one lives with that complex of images, which is one's conditioning. And however much one may talk about brotherhood, unity, wholeness, it is merely empty words having no actual daily meaning. But if one frees oneself from all that imposition, all the conditioning of all that superstitious nonsense, then one is breaking down the image. And also in one's relationship, if one is married or lives with somebody, is it possible not to create an image at all - not to record an incident which may be pleasurable or painful, in that particular relationship, not to record either the insult or the flattery, the encouragement or discouragement?</p>	<p>संकेत कर रहा है कि ये प्रतिमाएं विद्यमान हैं। और इन प्रतिमाओं के विद्यमान होने के कारण एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को पूरी तरह कभी भी जान नहीं पाता। यदि किसी ने शादी कर ली है या किसी की कोई प्रेमिका है, तो वह अपनी पत्नी को या प्रेमिका को पूरी तरह कभी जान नहीं पाता; हां, उसे लगता अवश्य है कि वह उसे जानता है; ऐसा इसलिए होता है कि उस व्यक्ति के साथ रह कर उसके बारे में विभिन्न प्रसंगों की, विभिन्न विक्षोभों की, प्रतिदिन के जीवन में घटने वाली घटनाओं की स्मृतियां उस व्यक्ति ने संगृहीत कर ली होती हैं और उस दूसरे व्यक्ति ने भी अपनी प्रतिक्रियाओं का अनुभव किया होता है और उनसे बनी प्रतिमाएं उसके मस्तिष्क में बैठ जाती हैं। ऐसी प्रतिमाएं हमारे जीवन में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। स्पष्ट दिखायी पड़ता है कि हममें से बहुत ही कम लोग किसी भी प्रकार की प्रतिमा से मुक्त हैं। और प्रतिमाओं से मुक्ति ही असली मुक्ति है। उस मुक्ति में प्रतिमाओं द्वारा उत्पन्न विभाजन नहीं होता। यदि आप हिंदू हैं, भारत में जन्मे, तमाम संस्कारबद्धता के साथ--वंश की, समुदाय की तथा उसके अंधविश्वासों की, धार्मिक विश्वासों की, धर्मसिद्धांतों की, धर्मविधियों की संस्कारबद्धता के साथ--तो आप प्रतिमाओं की इस समष्टि के साथ ही जिएंगे जो आपकी संस्कारबद्धता है। और बंधुत्व, एकता, पूर्णता आदि के बारे में आप कितनी भी बातें करें, वे सब खोखले शब्द-मात्र होंगे, उनका आपके प्रतिदिन के जीवन में कोई अर्थ नहीं होगा। पर यदि आप उन निरर्थक अंधविश्वासों की प्रतिबद्धता से, अपने पर लादे हुए उस सारे बोझ से अपने को मुक्त करेंगे तो आप उस प्रतिमा को तोड़ रहे होंगे। और संबंध में भी, चाहे आप विवाहित हैं या किसी के साथ रह रहे हैं, क्या यह संभव है कि कोई प्रतिमा निर्मित ही न हो, यानी उस रिश्ते के तहत घटे, सुखद या दुखद किसी भी प्रसंग को दर्ज ही न किया जाए, न अपमान को और न ही सम्मान को, न प्रोत्साहन को और न ही उत्साहभंग को--क्या ऐसा संभव है?</p>
<p>8 Is it possible not to record at all? Because if the brain is constantly</p>	<p>बिलकुल दर्ज ही न करना क्या संभव है? क्योंकि मस्तिष्क यदि जो भी हो रहा है, मनोवैज्ञानिक तौर</p>

## Chapter 4

<p>recording everything that is happening, psychologically, then it is never free to be quiet, it can never be tranquil, peaceful. If the machinery of the brain is operating all the time it wears itself out. This is obvious. It is what happens in our relationships with each other - whatever the relationship is - and if there is constant recording of everything then the brain slowly begins to wither away and that is essentially old age.</p>	<p>पर, उसे दर्ज करने में लगा रहे, तो फिर वह कभी मौन होने हेतु स्वतंत्र नहीं हो सकता, कभी स्थिर, शांत नहीं हो सकता। मस्तिष्क की यंत्रप्रणाली यदि लगातार कार्यरत रहे, तो वह छीज जाती है। यह स्पष्ट है। हमारे आपसी रिश्तों के बारे में यही होता है--वह रिश्ता चाहे कोई भी हो--और यदि हर बात इसी प्रकार मस्तिष्क में अविश्राम दर्ज होती रहती है तो मस्तिष्क धीरे धीरे मुरझाने लगता है, और यही असली बुढ़ापा है।</p>
<p>9 So in investigating we come upon this question: is it possible in our relationships with all their reactions and subtleties, with all their essential responses, is there a possibility of not remembering? This remembering and recording is going on all the time. We are asking whether it is possible not to record psychologically, but only to record that which is absolutely necessary? In certain directions it is necessary to record. For example, one must record all that which is necessary to learn mathematics. If I am to be an engineer I must record all the mathematics related to structures and so on. If I am to be a physicist I must record that which has already been established in that subject. To learn to drive a car I must record. But is it necessary in our relationships to record, psychologically, inwardly, at all? The remembrance of incidents past, is that love? When I say to my wife, 'I love you,' is that from a remembrance of all the things we have been through together - the incidents, the travail, the struggles, which are recorded, stored in the brain - is that remembrance actual love?</p>	<p>अतः हमारे इस अनुसंधान के दौरान यह प्रश्न सामने आता है कि हमारे संबंधों में उनकी सारी प्रतिक्रियाओं तथा सूक्ष्मताओं के रहते, उनके सारे अनिवार्य प्रत्युत्तरों के रहते क्या कोई ऐसी संभावना है कि स्मरण ही न हो? यह स्मरण और अंकन लगातार चालू ही रहता है। हम पूछ रहे हैं कि क्या मनोवैज्ञानिक तौर पर कुछ भी दर्ज ही न करना संभव है, सिवा उसके जिसका दर्ज किया जाना अत्यंत आवश्यक हो? कुछ मामलों में अंकन आवश्यक होता है। उदाहरण के तौर पर, गणित सीखने के लिए जो कुछ आवश्यक है उसका तो अंकन किया ही जाना चाहिए। यदि मुझे इंजीनियर बनना है तो संरचनाओं से संबंधित सारे गणित को मुझे मस्तिष्क में दर्ज कर ही लेना पड़ेगा। मुझे यदि भौतिक विज्ञानी बनना है तो उस विषय में अब तक जो कुछ प्रस्थापित हो चुका है उसे तो मस्तिष्क में अंकित करना ही होगा। कार चलाने के लिए कुछ चीजें मस्तिष्क में दर्ज करनी ही पड़ेंगी। परंतु क्या हमारे रिश्तों के संदर्भ में, मनोवैज्ञानिक तौर पर, आंतरिक तौर पर ऐसा अंकन आवश्यक है? अतीत की घटनाओं का स्मरण, क्या यही प्रेम है? जब मैं अपनी पत्नी से कहता हूं, "मुझे तुमसे प्यार है", तो उसका आधार क्या उन अनुभवों की स्मृति है जिनसे हम दोनों गुज़रे हैं--वे सारे प्रसंग, वह पीड़ा, वे संघर्ष जो मस्तिष्क में दर्ज किए गए हैं, संगृहीत किए गए हैं? क्या यह स्मरण वास्तविक प्रेम है?</p>
<p>10 So is it possible to be free and not to record psychologically at all? It is</p>	<p>तो क्या इस तरह मुक्त होना, मनोवैज्ञानिक तौर पर मस्तिष्क में कुछ भी अंकित न करना संभव है</p>

## Chapter 4

<p>only possible when there is complete attention. When there is complete attention there is no recording.</p>	<p>भी? यह तभी संभव होता है जब पूर्ण अवधान हो, पूरा ध्यान हो। जब पूर्ण अवधान होता है, तब अंकन नहीं होता।</p>
<p>11 I do not know why we want explanations, or why it is that our brains are not swift enough to capture, to have an insight into, the whole thing immediately. Why is it that we cannot see this thing, the truth of all this, and let that truth operate and therefore cleanse the slate and have a brain that is not recording at all psychologically? But most human beings are rather sluggish, they rather like to live in their old patterns, in their particular habits of thought; anything new they reject because they think it is much better to live with the known rather than with the unknown. In the known there is safety - at least they think there is safety, security - so they keep on repeating, working and struggling within that field of the known. Can we observe without the whole process and machinery of memory operating?</p>	<p>मुझे पता नहीं हम व्याख्याएं क्यों चाहते हैं, या हमारे मस्तिष्क इतने फुर्तीले क्यों नहीं हैं कि तुरंत सारी बात उनकी पकड़ में आ जाए, उसमें वे अंतर्दृष्टि पा सकें? ऐसा क्यों है कि हम इस बात को देख नहीं पाते, इसकी सच्चाई को देख नहीं पाते, इस तरह से कि वह सच्चाई क्रियाशील हो कर स्लेट को बिलकुल साफ कर दे और मस्तिष्क ऐसी अवस्था में हो कि मनोवैज्ञानिक तौर पर वह कुछ भी दर्ज न करे? परंतु अधिकांश लोग सुस्त ही होते हैं, वे अपने पुराने धिसे-पिटे ढांचों में, विचार की अपनी खास आदतों में ही जीना पसंद करते हैं। किसी भी नयी बात को वे नामंजूर कर देते हैं, क्योंकि अज्ञात के साथ जीने से ज्ञात के साथ जीना वे कहीं बेहतर समझते हैं। ज्ञात में सुरक्षा होती है--कम से कम वे ऐसा सोचते हैं कि सुरक्षा है, और इसलिए वे बार-बार पुरानी आदतों का पुनरावर्तन करते रहते हैं, ज्ञात के दायरे में ही काम में लगे रहते हैं, जूझते रहते हैं। क्या हम स्मृति की समस्त प्रक्रिया तथा यांत्रिकता के बिना अवलोकन कर सकते हैं?</p>
<p>12 What is love? This is a very complex question; all of us feel we love something or other, abstract love, love of a nation, love of a person, love of god, love of gardening, love of overeating. We have abused the word love so greatly that we have to find out basically what love is.</p>	<p>प्रेम क्या होता है? यह बहुत ही जटिल प्रश्न है। हम सब समझते हैं कि हम किसी न किसी वस्तु से प्रेम करते हैं--अमूर्त प्रेम, राष्ट्रप्रेम, किसी व्यक्ति से प्रेम, भगवान से प्रेम, बागबानी से प्रेम, अतिभक्षण से प्रेम। हमने प्रेम शब्द का इतना दुरुपयोग किया है कि बुनियादी तौर पर प्रेम होता क्या है, इस प्रश्न की छानबीन करना ज़रूरी हो गया है।</p>
<p>13 Love is not an idea. Love of god is an idea, love of a symbol is still an idea. When you go to the church and kneel down and pray, you are really worshipping, or praying to, something which thought has created. So, see what is happening, thought has created it - actually this is a fact - and you worship that which thought has created;</p>	<p>प्रेम कोई धारणा नहीं है। भगवान का प्रेम केवल एक धारणा है, किसी प्रतीक का प्रेम भी एक धारणा ही है। जब आप गिरजाघर जा कर घुटनों के बल बैठते हैं और प्रार्थना करते हैं, तब आप विचार द्वारा निर्मित किसी चीज़ की ही उपासना कर रहे होते हैं। ज़रा देखिए तो सही, हो क्या रहा है; वह विचार की ही निर्मिति है, यह वास्तव में एक तथ्य है, और विचार की बनायी उस चीज़ की आप उपासना कर रहे हैं, यानी बहुत सूक्ष्म</p>

## Chapter 4

<p>which means you are worshipping, in a very subtle way, yourself. This may seem a sacrilegious statement, but it is a fact. That is what is happening throughout the world. Thought creates the symbol with all the attributes of that symbol, romantic or logical and sane; having created it you love it, you become totally intolerant of any other thing. All the gurus, all the priests, all the religious structures, are based on that. See the tragedy of it. Thought creates the flag, the symbol of a particular country, then you fight for it, you kill each other for it; your nation will destroy the earth in competition with another nation, and so the flag becomes a symbol of your love. We have lived for millions of years that way and we are still extraordinarily destructive, violent, brutal, cynical human beings.</p>	<p>ढंग से, आप स्वयं अपनी ही उपासना कर रहे हैं। यह कथन एकदम धर्मविरोधी लग सकता है, पर यह एक तथ्य है। सारी दुनिया में यही चल रहा है। विचार प्रतीक को जन्म देता है, उस प्रतीक के सारे लक्षणों के साथ, चाहे वे रोमानी हों या तर्कयुक्त व संतुलित। वह आप ही की निर्मिति होती है और आपका उससे लगाव हो जाता है, और अन्य चीजों के बारे में आप संपूर्णतः असहिष्णु बन जाते हैं। सारे गुरु, सारे धर्माचार्य, सारी धार्मिक संरचनाएं इसी पर आधारित हैं। इसकी त्रासदी को देखिए। विचार ध्वज को जन्म देता है, किसी विशिष्ट देश का प्रतीक, और फिर आप उसके लिए लड़ते हैं, उसके लिए एक दूसरे की हत्या करते हैं; आपका राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के साथ लगी होड़ में सारी धरती को नष्ट करने को तैयार बैठा है। इस प्रकार ध्वज आपके प्रेम का प्रतीक बन जाता है। लाखों वर्षों से हम इसी ढर्रे पर जीते आए हैं, और अब भी हम असाधारण रूप से विध्वंसक, हिंसक, पाशविक तथा द्वेष से भरे मानव हैं।</p>
<p>14 When we say we love another, in that love there is desire, the pleasurable projections of the various activities of thought. One has to find out whether love is desire, whether love is pleasure, whether in love there is fear; for where there is fear there must be hatred, jealousy, anxiety, possessiveness, domination. There is beauty in relationship and the whole cosmos is a movement in relationship. Cosmos is order and when one has order in oneself one has order in one's relationships and therefore the possibility of order in our society. If one enquires into the nature of relationship one finds it is absolutely necessary to have order, and out of that order comes love. What is beauty? You see the fresh snow on the mountains this morning, clean, a lovely sight. You see those solitary trees standing black against that white. Looking at the world about us you see the marvellous machinery, the</p>	<p>जब हम कहते हैं कि हम किसी से प्रेम करते हैं, तब उस प्रेम में कामना होती है, विचार की विभिन्न गतिविधियों के सुखद प्रक्षेपण होते हैं। हमें पता लगाना होगा कि क्या प्रेम कामना है, इच्छा है, क्या प्रेम सुख है, क्या प्रेम में भय होता है, क्योंकि जहां भय है, वहां द्वेष, ईर्ष्या, चिंता, स्वामित्व, प्रभुत्व, यह सब भी अवश्यंभावी है। संबंध में सौंदर्य है, और सारा ब्रह्मांड संबंधों की गतिविधि है। ब्रह्मांड सुव्यवस्था है, और जब आप में सुव्यवस्था होगी तब आपके संबंधों में भी सुव्यवस्था होगी, इसलिए समाज में सुव्यवस्था होने की संभावना होगी। यदि हम संबंधों के स्वरूप की जांच पड़ताल करें तो हमें पता चलेगा कि सुव्यवस्था का होना अत्यंत आवश्यक है, और उस सुव्यवस्था से ही प्रेम का उदय होता है। सौंदर्य क्या है? आप आज प्रातःकाल पर्वतों पर वह ताज़ा बर्फ देख रहे हैं, बड़ा स्वच्छ, प्यारा दृश्य है। उस शुभ्र पृष्ठभूमि पर श्यामवर्ण दिखाई देने वाले वे एकाकी वृक्ष आप देख रहे हैं। अपने चारों ओर के विश्व को जब हम देखते हैं, तो हमें शानदार यंत्र-समूह दिखाई पड़ता है, अद्भुत कंप्यूटर दिखाई देता है, जिसकी अपनी खूबसूरती है। आप</p>

## Chapter 4

<p>extraordinary computer with its special beauty; you see the beauty of a face, the beauty of a painting, beauty of a poem - you seem to recognize beauty out there. In the museums or when you go to a concert and listen to Beethoven, or Mozart, there is great beauty - but always out there. In the hills, in the valleys with their running waters, and the flight of birds and the singing of a blackbird in the early morning, there is beauty. But is beauty only out there? Or is beauty something that only exists when the 'me' is not? When you look at those mountains on a sunny morning, sparkling clear against the blue sky, their very majesty drives away all the accumulated memories of yourself - for a moment. There the outward beauty, the outward magnificence, the majesty and the strength of the mountains, wipes away all your problems - if only for a second. You have forgotten yourself. When there is total absence of yourself beauty is. But we are not free of ourselves; we are selfish people, concerned with ourselves, with our importance or with our problems, with our agonies, sorrows and loneliness. Out of desperate loneliness we want identification with something or other and we cling to an idea, to a belief, to a person, especially to a person. In dependency all our problems arise. Where there is psychological dependency, fear begins. When you are tied to something corruption begins.</p>	<p>किसी चेहरे की, किसी चित्र की, किसी कविता की सुंदरता को देखते हैं--आपको सुंदरता कहीं बाहर प्रतीत होती है। जब आप किसी अजायबघर में जाते हैं या किसी संगीत-सभा में जा कर बीथोवन या मोत्सार्ट का संगीत सुनते हैं, तो आपको बड़े सौंदर्य की अनुभूति होती है, पर यह सब सौंदर्य होता कहीं बाहर ही है। पहाड़ों में, घाटियों में तथा उनमें बहनेवाले झरनों में, पक्षियों की उड़ान में, सवेरे-सवेरे गाने वाली कोयल की कूक में सौंदर्य होता है। परंतु सुंदरता क्या केवल बाहर ही होती है? या फिर सुंदरता कुछ ऐसी बात है जो तभी विद्यमान होती है जब 'मैं' नहीं होता? जब आप किसी उजली सुबह नीले आकाश की पृष्ठभूमि पर चमकते हुए उन पर्वतों को देखते हैं, तो उनकी महिमा ही आपकी सारी संचित स्मृतियों को भगा देती है, ऐसा चाहे बस एक क्षण के लिए ही क्यों न हो। वहां वह बाहरी सुंदरता, वह बाहरी तेजस्विता, वह महिमा, इन पर्वतों की वह ताकत, आपकी सारी समस्याओं को मिटा डालती है--पल भर के लिए ही सही। आप अपने-आपको भूल चुके होते हैं। जब 'आप' की पूर्ण अनुपस्थिति होती है, तभी सौंदर्य होता है। पर हम अपने-आपसे मुक्त नहीं हैं, हम स्वार्थी लोग हैं, अपने-आपमें ही, अपने महत्त्व में या अपनी समस्याओं में, अपनी पीड़ाओं में, अपने दुखों में, अपने अकेलेपन में व्यस्त। भीषण अकेलेपन के कारण हम किसी न किसी चीज़ से तादात्म्य चाहते हैं, और फिर हम किसी धारणा से, किसी विश्वास से, किसी व्यक्ति से चिपके रहते हैं, विशेषकर किसी व्यक्ति से। हमारी सारी समस्याएं परनिर्भरता से ही उत्पन्न होती हैं। जहां भी मनोवैज्ञानिक निर्भरता है, वहां भय की शुरुआत है। जब आप किसी चीज़ से बंध जाते हैं, तब भ्रष्टता, गड़बड़ी शुरू हो जाती है।</p>
<p>15 Desire is the most urgent and vital drive in our life. We are talking about desire itself, not desire for a particular thing. All religions have said that if you want to serve god you must subjugate desire, destroy desire, control desire. All the religions have said: substitute for desire an image that thought has created - the image that the</p>	<p>इच्छा हमारे जीवन की एक अत्यावश्यक, प्राणभूत प्रेरणा है। हम इच्छा मात्र की बात कर रहे हैं, किसी विशिष्ट चीज़ को पाने की इच्छा के बारे में नहीं। सारे धर्मों ने कहा है कि यदि आप भगवान की सेवा करना चाहते हैं तो इच्छा को वश में लाना होगा, इच्छा को नष्ट करना होगा, इच्छा को नियंत्रित करना होगा। सारे धर्मों ने कहा है : इच्छा के स्थान पर विचार द्वारा बनायी किसी</p>



## Chapter 4

<p>Christians have, that the Hindus have and so on. Substitute an image for the actual. The actual is desire - the burning of it and they think that one can overcome that desire by substituting something else for it. Or, surrender yourself to that which you think is the master, the saviour, the guru - which again is the activity of thought. This has been the pattern of all religious thinking. One has to understand the whole movement of desire; for obviously it is not love, nor yet compassion. Without love and compassion, meditation is utterly meaningless. Love and compassion have their own intelligence which is not the intelligence of cunning thought.</p>	<p>प्रतिमा की स्थापना करो--ईसाइयों की प्रतिमा, हिंदुओं की प्रतिमा आदि--यानी वास्तविक के स्थान पर काल्पनिक की स्थापना। इच्छा वास्तविक है, ज्वलंत है, और लोग समझते हैं कि उसके स्थान पर किसी दूसरी चीज़ की स्थापना करने से उस पर काबू पा लिया जाएगा। या फिर आप उस व्यक्ति की शरण में चले जाते हैं जिसे आप महात्मा, परित्राता, गुरु मानते हैं। और ये सब विचार के ही क्रियाकलाप हैं। सारे धार्मिक चिंतन का यही ढांचा रहा है। इच्छा की समग्र गतिविधि को समझना हमारे लिए आवश्यक है, क्योंकि स्पष्ट है कि वह न तो प्रेम है और न ही करुणा। प्रेम और करुणा की अपनी स्वयं की एक प्रज्ञा होती है; वह धूर्त विचार की बुद्धिमत्ता नहीं होती।</p>
<p>16 So it is important to understand the nature of desire, why it has played such an extraordinarily important part in our life; how it distorts clarity, how it prevents the extraordinary quality of love. It is important that we understand and do not suppress, do not try to control it or direct it in a particular direction, which you think may give you peace.</p>	<p>अतः इच्छा का स्वरूप क्या है तथा इच्छा हमारे जीवन में इतनी असाधारण भूमिका क्यों निभाती रही है, यह समझ लेना महत्त्वपूर्ण है। यह समझना आवश्यक है कि इच्छा कैसे स्पष्टता को विकृत कर देती है, प्रेम की उस अद्भुत गुणवत्ता में कैसे आड़े आती है। आवश्यकता यह है कि हम इच्छा को समझें, न कि उसका दमन करें, या उसे किसी विशिष्ट दिशा में संचालित करने लगे यह मान कर कि ऐसा करने से आपको शांति मिल जाएगी।</p>
<p>17 Please bear in mind that the speaker is not trying to impress you or guide and help you. But together we are walking a very subtle, complex path. We have to listen to each other to find out the truth about desire. When one understands the significance, the meaning, the fullness, the truth of desire, then desire has quite a different value or drive in one's life.</p>	<p>एक बात ध्यान में रखिए कि यह वक्ता न तो आपको प्रभावित करना चाहता है और न ही आप का मार्गदर्शन या आपकी सहायता करना चाहता है। बल्कि हम सब मिलकर बहुत ही सूक्ष्म व जटिल राह पर चल रहे हैं। इच्छा के बारे में सच्चाई का पता लगाने के लिए हमें एक दूसरे की बात सुननी होगी। जब हम इच्छा के तात्पर्य को, अर्थ को, उसके विस्तार को, उसकी सच्चाई को समझ पाएंगे, तब इच्छा का हमारे जीवन में कुछ अलग ही मूल्य होगा, तब इच्छा जीवन की एक अलग ही प्रेरक शक्ति होगी।</p>
<p>18 When one observes desire, is one</p>	<p>जब आप इच्छा का निरीक्षण करते हैं तब क्या</p>

## Chapter 4

<p>observing it as an outsider looking at desire? Or is one observing desire as it arises? Not desire as something separate from oneself, one is desire. You see the difference? Either one observes desire, which one has when one sees something in the shop window which pleases one, and one has the desire to buy it so that the object is different from 'me', or else the desire is 'me', so there is a perception of desire without the observer watching desire.</p>	<p>आप किसी अजनबी की तरह उसे देखते हैं? या इच्छा उठने के साथ ही उसका निरीक्षण करते चलते हैं? ऐसा नहीं कि इच्छा करने वाले व्यक्ति से इच्छा अलग है; इच्छा करने वाला ही स्वयं इच्छा है। आप इस फर्क को समझ रहे हैं? या तो आप इच्छा का--जो आपमें तब जागती है जब आप दुकान में सजी किसी चीज़ को देखते हैं जो आपको पसंद आ जाती है और आप उसे खरीदना चाहते हैं--इस प्रकार निरीक्षण करते हैं कि निरीक्षण का विषय 'मैं' से भिन्न है, या फिर वह इच्छा ही 'मैं' होती है और इस तरह इच्छा की वह प्रतीति होती है, प्रत्यक्ष बोध होता है जिसमें इच्छा का निरीक्षण करने वाला कोई निरीक्षक नहीं है।</p>
<p>19 One can look at a tree. 'Tree' is the word by which one recognizes that which is standing in the field. But one knows that the word 'tree' is not the tree. Similarly one's wife is not the word. But one has made the word one's wife. I do not know if you see all the subtleties of this. One must very clearly understand, from the beginning, that the word is not the thing. The word 'desire' is not the feeling of it - the extraordinary feeling there is behind that reaction. So one must be very watchful that one is not caught in the word. Also the brain must be active enough to see that the object may create desire - desire which is separate from the object. Is one aware that the word is not the thing and that desire is not separate from the observer who is watching desire? Is one aware that the object may create desire but the desire is independent of the object?</p>	<p>मान लीजिए आप किसी वृक्ष की ओर देख रहे हैं। 'वृक्ष' केवल एक शब्द है और उसकी सहायता से मैदान में खड़ी उस वस्तु को आप पहचान लेते हैं। परंतु हम जानते हैं कि 'वृक्ष' शब्द वास्तविक वृक्ष नहीं है। इसी प्रकार आपकी पत्नी वह शब्द 'पत्नी' नहीं है। पर हम 'पत्नी' शब्द को ही पत्नी मान बैठे हैं। मुझे नहीं मालूम कि आप इसकी सारी बारीकियों को समझ रहे हैं या नहीं। हमें शुरू से ही बहुत स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि शब्द एक बात है और वस्तु अलग। 'इच्छा' शब्द उस शब्द द्वारा संकेतित भाव नहीं है--वह असाधारण एहसास जो उस प्रतिक्रिया के पीछे छिपा है। इसलिए हमें बहुत सतर्क रहना होगा कि हम कहीं शब्द में फंस न जाएं। इसी तरह, हमारा मस्तिष्क इतना फुर्तीला होना चाहिए कि यह देख पाए कि कोई चीज़ इच्छा उत्पन्न कर सकती है और वह इच्छा उस चीज़ से पृथक होती है। क्या आपको एहसास है कि शब्द वस्तु नहीं है, और इच्छा का अवलोकन करने वाले से इच्छा अलग नहीं है? क्या आपको भान है कि कोई विषय इच्छा तो उत्पन्न कर सकता है, फिर भी वह इच्छा उस विषय से स्वतंत्र, अलग होती है?</p>
<p>20 How does desire flower? Why is there such extraordinary energy behind it? If we do not understand deeply the nature of desire we will always be in</p>	<p>इच्छा खिलती कैसे है? उसके पीछे इतनी असाधारण ऊर्जा क्यों होती है? यदि हम इच्छा के स्वरूप को गहराई से समझ नहीं लेते तो हम हमेशा एक दूसरे के साथ द्रुद्ध में रहेंगे। मैं किसी</p>

## Chapter 4

<p>conflict with each other. One may desire one thing and one's wife may desire another and the children may desire something different. So we are always at loggerheads with each other. And this battle, this struggle, is called love, relationship.</p>	<p>एक चीज़ को चाहूंगा, मेरी पत्नी किसी और वस्तु को चाहेगी, और बच्चे किसी और ही वस्तु की इच्छा करेंगे। इसलिए हम हमेशा आपस में भिड़ते रहेंगे। और इस लड़ाई को, इस संघर्ष को ही प्रेम कहा जाता है, संबंध कहा जाता है।</p>
<p>21 We are asking: what is the source of desire? We must be very truthful in this, very honest, for desire is very very deceptive, very subtle, unless we understand the root of it. For all of us sensory responses are important - sight, touch, taste, smell, hearing. And a particular sensory response may for some of us be more important than the other responses. If we are artistic we see things in a special way. If we are trained as an engineer then the sensory responses are different. so we never observe totally, with all the sensory responses. We each respond somewhat specially, divided. Is it possible to respond totally with all one's senses? See the importance of that. If one responds totally with all one's senses there is the elimination of the centralized observer. But when one responds to a particular thing in a special way then the division begins. Find out when you leave this tent, when you look at the flowing waters of the river, the light sparkling on the swiftness of the waters, find out if you can look at it with all your senses. Do not ask me how, for that becomes mechanical. But educate yourself in the understanding of total sensory response.</p>	<p>हम पूछ रहे हैं : इच्छा का स्रोत क्या है? इस मामले में हमें बहुत सच्चाई और ईमानदारी से काम लेना होगा, क्योंकि इच्छा बड़ी धोखेबाज, बड़ी धूर्त होती है, जब तक कि हम उसकी जड़ को समझ न लें। हम सबके लिए ऐंद्रिय प्रतिक्रियाएं, ऐंद्रिय प्रतीतियां महत्त्वपूर्ण होती हैं--दर्शन, स्पर्श, रसास्वादन, गंधग्रहण, श्रवण। और कुछ लोगों के लिए कोई विशिष्ट इंद्रियबोध अन्य इंद्रियबोधों से अधिक महत्त्वपूर्ण हो सकता है। यदि हम कलाप्रेमी हैं तो हम चीज़ों को एक अलग ढंग से देखेंगे। यदि हम इंजीनियर होने के लिए प्रशिक्षित हुए हैं तो हमारी ऐंद्रिय प्रतीतियां पूर्णतः भिन्न होंगी। यानी, हम समग्रता से निरीक्षण कभी नहीं करते, सारी ऐंद्रिय अनुक्रियाओं के साथ। हर कोई अपने विशिष्ट ढंग से दूसरों से हटकर ऐसा करता है। क्या अपनी सारी इंद्रियों के साथ समग्रता से प्रतीति करना हमारे लिए संभव है? इस बात के महत्त्व को समझिए। सारी इंद्रियों के साथ समग्रता से यदि बोध किया जाता है, तो केंद्रवर्ती निरीक्षक लुप्त हो जाता है। परंतु जब हम किसी विशिष्ट चीज़ का इंद्रियबोध किसी विशिष्ट ढंग से करते हैं, तो विभाजन शुरू हो जाता है। जब आप इस तंबू से बाहर निकलेंगे और नदी के बहते पानी की ओर देखेंगे व पानी की द्रुत लहरों पर चमकने वाले प्रकाश की ओर देखेंगे, तब पता लगाइए कि क्या आप अपनी सारी इंद्रियों के साथ उसकी ओर देख सकते हैं। मुझसे यह मत पूछिए कि “कैसे?” क्योंकि तब तो बात पूर्णतः यांत्रिक हो जाएगी। बल्कि समग्र इंद्रियबोध को समझने के लिए अपने-आपको शिक्षित कीजिए।</p>
<p>22 When you see something, the seeing brings about a response. You see a green shirt, or a green dress, the seeing awakens the response. Then contact takes place. Then from contact</p>	<p>जब आप कुछ देखते हैं, तो वह देखना ही कोई अनुक्रिया उत्पन्न करता है। मान लीजिए आपने एक हरे रंग का कुर्ता या हरे रंग की पोशाक देखी, तो उसे देखते ही आप में एक एहसास</p>

## Chapter 4

<p>thought creates the image of you in that shirt or dress, then the desire arises. Or you see a car in the road, it has nice lines, it is highly polished and there is plenty of power behind it. Then you go around it, examine the engine. Then thought creates the image of you getting into the car and starting the engine, putting your foot down and driving it. So does desire begin and the source of desire is thought creating the image, up to that point there is no desire. There are the sensory responses, which are normal, but then thought creates the image and from that moment desire begins. Now, is it possible for thought not to arise and create the image? This is learning about desire, which in itself is discipline. Learning about desire is discipline, not the controlling of it. If you really learn about something it is finished. But if you say you must control desire, then you are in a totally different field altogether. When you see the whole of this movement you will find that thought with its image will not interfere; you will only see, have the sensation and what is wrong with that?</p>	<p>जागता है। फिर संपर्क होता है। उसके बाद, उस संपर्क के फलस्वरूप विचार उस कुर्ते को या पोशाक को पहने हुए आपकी एक छवि तैयार करता है, और फिर उस कुर्ते को या पोशाक को पाने की इच्छा जागती है। या मान लीजिए रास्ते पर किसी कार को आप देखते हैं, उसकी बड़ी सुंदर आकृति है, शानदार चमक है, और उसके पीछे बहुत सारी ताकत है। फिर आप उस कार को देखते-भालते हैं, उसके इंजन की जांच करते हैं, तब विचार आपकी एक प्रतिमा बनाता है कि आप कार में बैठ कर इंजन चालू कर रहे हैं, अपने पैर को हरकत में लाकर कार चलाने लगे हैं। इस प्रकार इच्छा की शुरूआत होती है, और इच्छा का स्रोत होता है विचार द्वारा कोई प्रतिमा बना लेना, और ऐसा होने तक उस इच्छा का कोई वजूद नहीं होता। ऐंद्रिय अनुक्रियाएं होना स्वाभाविक है, पर तब विचार प्रतिमा तैयार करता है, और उसी क्षण से इच्छा शुरू हो जाती है। अब, क्या ऐसा हो सकता है कि विचार न उठे और प्रतिमा न बनाए? यही है इच्छा के बारे में सीखना, और यह अपने-आपमें एक साधना है, अनुशासन है। इच्छा के बारे में सीखना अनुशासन है, न कि इच्छा का दमन करना। यदि आप किसी चीज़ के बारे में सचमुच सीखते हैं तो वह समाप्त हो जाती है। पर आप यदि कहें कि आपको इच्छा का दमन करना है, तो फिर आप पूर्णतः भिन्न क्षेत्र में होते हैं। जब आप इस समस्त गतिविधि को देख पाएंगे तब आप को पता चलेगा कि विचार और विचार-जनित प्रतिमा हस्तक्षेप नहीं करते। आप बस देखते हैं, आपको संवेदन होता है। और उसमें क्या बुराई है?</p>
<p>23 We are all so crazy about desire, we want to fulfil ourselves through desire. But we do not see what havoc it creates in the world - the desire for individual security, for individual attainment, success, power, prestige. We do not feel that we are totally responsible for everything we do. If one understands desire, the nature of it, then what place has it? Has it any place where there is love? Is love then something so extraordinarily outside of</p>	<p>हम सभी इच्छा के बारे में दीवाने-से हो गए हैं; इच्छा के ज़रिये हम अपने-आप को परितृप्त कर लेना चाहते हैं। पर हमें एहसास नहीं कि इसने दुनिया में कैसी तबाही मचा दी है--इस निजी सुरक्षा की, व्यक्तिगत उपलब्धि की, कामयाबी की, सत्ता की, प्रतिष्ठा की इच्छा ने। हमें ऐसा नहीं लगता कि जो कुछ भी हम करते हैं उसके लिए हम पूरी तरह ज़िम्मेदार हैं। यदि हम इच्छा को समझ लें, उसकी प्रकृति को समझ लें, तो फिर उसका स्थान क्या होगा? जहां प्रेम है वहां क्या इच्छा का कोई स्थान है? तो क्या प्रेम मनुष्य</p>

## Chapter 4

<p>human existence that it has actually no value at all? Or, is it that we are not seeing the beauty and the depth, the greatness and sacredness of the actuality of it; is it that we have not the energy, the time to study, to educate ourselves, to understand what it is? Without love and compassion with its intelligence, meditation has very little meaning. Without that perfume that which is eternal can never be found. And that is why it is important to put the 'house' of our life, of our being, of our struggles, into complete order.</p>	<p>जीवन के इतनी बाहर की कोई अवस्था है कि वस्तुतः उसका कोई मूल्य ही नहीं है? या, क्या ऐसी बात है कि उसकी वास्तविकता की, उसके यथार्थ की सुंदरता तथा गहराई को, उसकी महानता तथा पावनता को हम देख नहीं पा रहे? क्या ऐसा है कि प्रेम क्या है, इसका अध्ययन करने के लिए, स्वयं को इस संदर्भ में शिक्षित करने के लिए, इसे समझने के लिए न हमारे पास ऊर्जा है न समय? प्रेम, करुणा तथा प्रज्ञा के बिना ध्यान का कोई अर्थ नहीं। प्रेम के परिमल बिना उस चिरंतन तत्त्व का पता कभी नहीं चलेगा। और इसीलिए अपने संघर्षमय जीवन के, अपने अस्तित्व के इस 'घर' में पूर्ण सुव्यवस्था लाना आवश्यक है।</p>
24 19th July, 1981	ज्ञानेन, १६ जुलाई १९८१